इसे पढ़कर युवाओं में हमारे क्रांतिवीरों के प्रति उदासीनता छोड़कर संवेदना और आदर जागेगा

हाथ में आने पर पूरी पढ़कर ही नीचे रख जाए ऐसी पुस्तक है क्रांतिदूत झांसी फाइल्स! हम अधिकतर स्वतंत्रता सेनानियों को इतिहास की माध्यम से ही जानते हैं और इसलिए उनसे हमारा जुड़ाव भूतकाल की महान विभूति के रूप में ही होता है। किंतु क्रांति दूध की श्रृंखला में स्वतंत्रता सेनानियों को एक उपन्यास कथा के रूप में हम सबके साथ साझा कर उसे जो हमारे जीवन का भाग बनाया है, उसे भावों से जोड़ा है , उस कार्य के लिए मनीष जी का बहुत-बहुत साधुवाद! बहुत से ऐसे स्वतंत्रता सेनानी जिने हम ' फेसलेस वॉरियर्स' कहते हैं और ऐसे बहुत से क्रांतिवीर जिन्होंने अपना सर्वस्व लगा दिया अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के आधार और धुरी बने रहने के लिए - उनके बारे में

हम बहुत ही कम जानते हैं। मास्टर रुद्र नारायण सिंह इस पहले भाग के मुख्य पात्र लगते भी हैं भी और नहीं भी क्योंकि कथा का केंद्र तो आज़ाद चंद्रशेखर हरिशंकर ब्रह्मचारी लगते हैं, कथा का ऐसा सुंदर बंधारण है। भगत सिंह, अशफाक, बिस्मिल, सुखदेव इन सब नामों से तो हम परिचित थे किंतु सदाशिव राव मलकापुर , भगवानदास माहौर, विश्वनाथ गंगाधर वैशंपायन, खनियाधाना के महाराज, रामकृष्ण इन सबके बारे में हमें कुछ पता नहीं। इन सब मौन धारण कर चुके क्रांतिवीरों को इस कथा के द्वारा हम जान पा रहे हैं इसके लिए लेखक का धन्यवाद। यह कार्य साधारण नहीं! मानो, मनीष जी के हस्तलिखित सप्रेम भेंट की पंक्ति उस प्रति के पाठक के लिए नहीं है बल्कि उन सभी महान आत्माओं के लिए है जिन्हें #jhansi_files की यह श्रृंखला समर्पित है।
ओरछा के राजा रामचंद्र का का इस कथा के द्वारा प्रत्यक्ष चित्रण मधुर है।
इस सुंदर रूप में इन छोटे-छोटे प्रसंगों को पिरो कर एक पूरी कथा के रूप में लिखना लेखक की परिपक्व होती लेखनी और वैचारिक प्रगल्भता को दर्शाता है। साथ ही पुस्तक के आरंभ में लिखी शपथ जिस भाव से ली गई है और लिखी गई है, वह भाव पाठक तक भी पहुंचता है। पुस्तक के अंत में दी गई लंबी संदर्भ सूची/डिस्क्लेमर से पता चलता है कितना श्रम और शोध लगा है इतने सरल रूप में हमारे सामने आए शब्दों के पीछे!

इन असाधारणता धारण करे साधारण मनुष्यों के जीवन चरित्र, कथा के माध्यम से युवाओं और छात्रों तक प्रभावी रूप से

पहुंचेंगे। हमारे उस काल के समाज और लोगों के प्रति जो एक उदासीनता है वह इनके बारे में जानने से दूर होगी और युवाओं में संवेदना और आदर जगेगा, ऐसा मेरा विश्वास भी है और शुभ कामना भी!

अगले अंक की प्रतीक्षा में...